नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

समग्र राष्ट्रीय न्यायिक नीति : समय की जरूरत

भोपाल स्थित राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी में आयोजित उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों का सम्मेलन भारतीय न्यायपालिका के लिए एक निर्णायक मोड़ के रूप में देखा जाना चाहिए. यह केवल औपचारिक संवाद नहीं, बल्कि उस न्यायिक व्यवस्था पर गंभीर चिंतन है, जो वर्षों से लंबित मामलों, प्रक्रियागत जटिलताओं और आम नागरिक की सीमित पहुंच से जूझ रही है. ऐसे समय में राष्ट्रीय न्यायिक नीति का विचार न्यायिक सुधारों की धुरी बनकर सामने आया है. भारत की न्यायपालिका संरचनात्मक रूप से संघीय है, किंतु न्याय की अपेक्षा पूरे देश में एक जैसी है. इसके बावजूद अलग-अलग राज्यों की अदालतों में प्रशासनिक प्रक्रियाओं, कार्यशैली और तकनीकी उपयोग में भारी असमानता दिखाई देती है.

राष्ट्रीय न्यायिक नीति का उद्देश्य इसी असंतुलन को समाप्त कर एक समान न्यायिक दृष्टिकोण विकसित करना है. जब अदालतों की प्रक्रियाएं स्पष्ट और मानकीकृत होंगी, तब न्याय केवल निर्णय तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि आम नागरिक के अनुभव में भी भरोसेमंद बनेगा. दरअसल, लंबित मामलों की समस्या भारतीय न्यायपालिका की सबसे बड़ी चुनौती है. करोड़ों मामले वर्षों से विचाराधीन हैं, जिससे न्याय में देरी एक सामान्य स्थिति बन गई है. राष्ट्रीय न्यायिक नीति के अंतर्गत यदि मामलों के वर्गीकरण, प्राथमिकता निर्धारण और समय प्रबंधन के लिए स्पष्ट दिशा तय की जाती है, तो लंबित मामलों पर प्रभावी नियंत्रण संभव है. तथ्य और आंकड़ों के आधार पर नीति निर्माण न्यायिक प्रणाली को अधिक व्यावहारिक और परिणामोन्मुख बना सकता है.

न्यायिक सुधारों में तकनीक की भूमिका अब अनदेखी नहीं की जा सकती. डिजिटल सुनवाई ने यह सिद्ध किया है कि न्यायालय की कार्यवाही केवल भौतिक उपस्थिति तक सीमित नहीं है. वीडियो माध्यम से सुनवाई, अंकीय दस्तावेज और ऑनलाइन सूचना प्रणाली ने न्याय को अधिक सुलभ बनाया है. इससे समय की बचत होती है और अनावश्यक स्थगन की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगता है.

परंतु तकनीक का लाभ तभी सार्थक होगा, जब वह सभी तक समान रूप से पहुंचे. यही डिजिटल समानता की मूल भावना है. आज महानगरों और उच्च न्यायालयों में तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध हैं, लेकिन जिला और तहसील स्तर की अदालतें अब भी संसाधनों की कमी से जूझ रही हैं. राष्ट्रीय न्यायिक नीति यदि डिजिटल समानता को अनिवार्य लक्ष्य के रूप में अपनाती है, तो न्यायिक व्यवस्था में क्षेत्रीय असमानता कम होगी.

दरअसल,जन केंद्रित न्याय की अवधारणा इस सम्मेलन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है. आम नागरिक के लिए न्यायालय आज भी भाषा, खर्च और जटिल प्रक्रियाओं का प्रतीक बना हुआ है. यदि राष्ट्रीय न्यायिक नीति के माध्यम से सरल भाषा, क्षेत्रीय भाषाओं में निर्णयों की उपलब्धता और मुवक्किल अनुकूल व्यवस्था विकसित होती है, तो न्यायपालिका और समाज के बीच की दूरी कम होगी. न्याय केवल होना ही नहीं चाहिए, बल्कि महसूस भी होना चाहिए.

न्यायिक सुधार लोकतंत्र की मजबूती से सीधे जुड़े हुए हैं. एक सक्षम, पारदर्शी और उत्तरदायी न्यायपालिका ही संवैधानिक मूल्यों की रक्षा कर सकती है. राष्ट्रीय न्यायिक नीति इस दिशा में सुधारों को निरंतरता और स्थायित्व देने का माध्यम बन सकती है. कुल मिलाकर भोपाल सम्मेलन ने यह संकेत दिया है कि न्यायपालिका अब परिवर्तन की आवश्यकता को स्वीकार कर रही है. अब चुनौती इस मंथन को ठोस नीति और प्रभावी क्रियान्वयन में बदलने की है. यदि राष्ट्रीय न्यायिक नीति संवैधानिक मर्यादाओं और सहमति के साथ आगे बढ़ती है, तो यह भारतीय न्याय व्यवस्था में एक नए युग की शुरुआत साबित होगी. दरअसल, केंद्र सरकार को इस सम्मेलन में प्राप्त सुझावों पर गंभीरता से विचार करके अमल में लाना चाहिए.

ऑनलाइन गेमिंग की लत लेने लगी बच्चों की जान

पुलिस का कहना है कि इस तरह के गेम या तो सोशल मीडिया या फिर कुछ खास मोबाइल एप्स में खेले जाते हैं. अनुमान यह है कि ऐसे खेलों का संबंध डार्क वेब से है. इन गेम्स में गेम मास्टर वही अजनबी होता है जो खुद को कोरियाई या विदेशी नागरिक बताता है और बच्चों के साथ संपर्क में रहता है. पहले वह बच्चों से नरमी से पेश आता है और उनका भरोसा जीतने के बाद फिर उन पर सख्ती दिखाने लगता है, जब बच्चे गेम के आदी हो जाते हैं, तो वह उन पर हुकुम चलाने लगता और चैलेंज निरंतर कठिन करता रहता है. 50वें दिन खुदकुशी का चैलेंज होता है. कुछ वर्ष पहले ब्लू व्हेल चैलेंज गेम वायरल हुआ था, जब इसकी वजह से दुनियाभर से आत्महत्याओं की खबरें आने लगीं, तो इस पर अनेक देशों में प्रतिबंध लगा दिया गया. लेकिन एक बार फिर खतरनाक ऑनलाइन टास्क गेम्स वापस आ रहे हैं, जिससे पैरेंट्स के दिल दहल रहे हैं?

कोरियाई लव गेम, ब्लू व्हेल, ब्लैकआउट चैलेंज और सॉल्ट एंड आइस चैलेंज ऑनलाइन प्रकट हो रहे हैं. उनका संबंध चिंताजनक नतीजों से जोड़ा जा रहा है. अत: यह फिर से प्रासंगिक हो गया है कि बच्चों के लिए इंटरनेट वास्तव में कितना सुरक्षित है? दरअसल, इस समस्या का समाधान यह नहीं है कि कुछ खतरनाक ऑनलाइन गेम्स पर प्रतिबंध लगा दिया जाए बल्कि यह है कि बच्चों व किशोरों की इंटरनेट तक पहुंच पर विराम लगा दिया जाए. दुनिया बच्चों के लिए सोशल मीडिया की सीमा निर्धारित कर रही है. अब समय आ गया है कि भारत भी ऐसा ही करे.

हम एक उम्र का होने पर ही किसी को ड्राइविंग लाइसेंस हासिल करने की अनुमति देते हैं और इस प्रकार की समय सीमा अन्य चीजों पर भी है, जैसे शराब पीना या विवाह करना. यह आयु सीमाएं विज्ञान आधारित, विशेषकर मानव दिमाग की संरचना से संबंधित हैं. प्री-फ्रंटल कोर्टेक्स दिमाग का वह हिस्सा है, जो निर्णय, योजना, आवेग नियंत्रण व दीर्घकालीन नतीजों की समीक्षा के लिए जिम्मेदार है. यह हिस्सा बचपन या किशोरावस्था में पूर्णत: विकसित नहीं हो पाता है.

न्यूरो वैज्ञानिक शोध से मालूम होता है कि प्री-फ्रंटल कोर्टेक्स 25 साल की आयु तक पूर्णत: विकसित नहीं हो पाता है. विकास की इस समय सारणी से स्पष्ट हो जाता है कि किशोर आवेग व्यवहार, भावनात्मक अस्थिरता और साथियों के प्रभाव का अधिक शिकार क्यों होते हैं? आज 8-10 साल के बच्चों के हाथ में मोबाइल फोन है और वह बिना रोक-टोक सोशल मीडिया को एक्सेस कर रहे हैं. यह डिजिटल लैंडस्केप इस तरह से डिजाइन किए गए हैं कि ध्यान आकर्षित करें, भावनात्मक कमजोरियों का शोषण करें. अब दुनियाभर की समझ में आ रहा है कि बच्चों के लिए अप्रतिबंधित सोशल मीडिया एक्सेस गंभीर समस्या है. पिछले एक वर्ष के दौरान अनेक देशों ने इस संदर्भ में ठोस निर्णय लिए हैं.

सबसे पहले पिछले साल दिसंबर में ऑस्ट्रेलिया ने प्रतिबंध लगाया कि 16 बरस से कम के बच्चे सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं कर सकते और लाखों नाबालिग बच्चों के एकाउंट्स टिकटॉक, इंस्टाग्राम, फेसबुक, स्नैपचैट, यू-ट्यूब व अन्य प्लेटफॉर्म्स से हटा दिए गए. अब फ्रांस की नेशनल असेंबली ने 15 साल से कम के बच्चों के लिए सोशल मीडिया प्रतिबंधित किया है. अन्य यूरोपीय देश जैसे डेनमार्क, स्पेन, जर्मनी आदि भी इसी दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं. मलेशिया ने घोषणा की है, वह 2027 में 16 साल से कम के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा देगा, जबकि मिस्र इसे चडिजिटल अव्यवस्थाज कहते हुए इस पर प्रतिबंध लगाने की योजना बना रहा है. अगर गाजियाबाद जैसी दुखद घटना को पुन: होने से रोकना है, तो वैश्विक ट्रेंड के संग चलना ही होगा.

✍ नरेंद्र शर्मा

गाजियाबाद में तीन बहनों की खुदकुशी

गाजियाबाद जिले के साहिबाबाद की भारत सिटी की 9वीं मंजिल के अपने अपार्टमेंट से लगभग 2.15 बजे तीनों बहनों ने एक साथ अपने अपार्टमेंट की बाल्कनी से नीचे छलांग लगा दी. तीनों की मौत हो गई. इन लड़कियों को कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन गेमिंग की लत पड़ गई थी, जिसे वह लगभग बिना ब्रेक के खेलती थीं. उन्हें विशेषरूप से कोरियाई लव गेम की लत थी. कोरियाई लव गेम जैसे मोबाइल गेम्स में बच्चे अजनबियों से बातें करते हैं. दोस्ती की बातों से शुरू होने वाला गेम गेम मास्टर के खौफनाक खेल में बदल जाता है. बच्चों को अलग-अलग टास्क दिए जाते हैं. एक रिपोर्ट के मुताबिक आखिर में 50वें दिन होता है खुदकुशी का चैलेंज. इस दौरान बच्चों को धमकाया भी जाता है.

विंध्य की डायरी

अपनी ही सरकार के सिस्टम पर देवसर विधायक का प्रहार

डॉ. रवि तिवारी

ऊर्जाधानी में सिस्टम को लेकर मंच से जनप्रतिनिधियों का गुस्सा फूटा. स्कूल, अस्पताल, आंगनवाडी जैसे मुद्दो को लेकर अफसरो को कटघरे में खड़ा करते हुए अपनी ही सरकार के सिस्टम पर हमला किया. नीति आयोग के संपूर्णता अभियान 2.0 की औपचारिक शुरुआत जिस सरकारी मंच से विकास के दावे गिनाने के लिए की गई थी, वही मंच अटल बिहारी सामुदायिक भवन बिलौंजी में सरकारी सिस्टम की पोल खोलने का अखाड़ा बन गया. देवसर से भाजपा विधायक राजेंद्र मेश्राम ने सैकड़ों लोगों और वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में अपनी ही सरकार के तंत्र पर तीखा हमला बोला.

विधायक ने दो टूक कहा कि सरकारी फाइलों में जो विकास दिखाया जा रहा है, वह जमीनी हकीकत से कोसों दूर है. शिक्षा व्यवस्था को यहां कटघरे में खड़ा करते हुए कागजो में बच्चो का भविष्य सवारने की बात कही. वही स्वास्थ्य व्यवस्था पर माननीय विधायक के शब्द और भी तीखे थे. समुचित इलाज के नाम पर केवल योजनाओं का आकड़ा पेश किया जाता है. जिस समय विधायक बेबाक तरीके से सिस्टम की पोल खोल रहे थे उस समय मंच पर मौजूद अधिकारी असहज दिखाई दिये और जनता-जनार्दन ने तालियां बजाकर विधायक जी के बयान का समर्थन किया. तालियों की गूंज सिस्टम के प्रति जनता की नाराजगी की आवाज थी. अब सवाल यह उठता है कि जब सब कुछ ठीक चल रहा है तो फिर सत्तारूढ़ दल के विधायक को सार्वजनिक मंच से अपने ही प्रशासन को कटघरे में खड़ा करने की जरूरत क्यो पड़ी? विधायक द्वारा उठाए गए ये मुद्दे सिर्फ भाषण नहीं, बल्कि सिस्टम के लिए चेतावनी हैं. यदि अब भी कागजी प्रगति के सहारे काम चलता रहा, तो योजनाएँ केवल मंचों और रिपोर्टों तक ही सीमित रह जाएंगी. जनता अब जवाब चाहती है और वह भी जमीन पर दिखने वाला.

कांग्रेस दिखाएगी संगठन की ताकत

नगरीय निकाय चुनाव के पहले कांग्रेस बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत कर अपनी ताकत दिखाने की तैयारी में है. आम जनता तक कैसे पहुंचे और लोगो को पार्टी संगठन से जोडने के लिये ग्राम पंचायत एवं वार्डवार कमेटियां गठित की जाएगी. ताकि संगठन को मजबूत बनाकर आने वाले चुनाव में सत्ताधारी पार्टी से मुकाबला किया जाय. कमेटी गठन की जिम्मेदारी ब्लाक और मण्डलम अध्यक्ष को दी गई है. निष्ठावान एवं पार्टी के प्रति समर्पण रखने वाले कार्यकर्ताओ को पहली प्राथमिकता दी जाएगी. खास बात यह है कि कमेटियों में हर जाति वर्ग एवं महिलाओं की भागीदारी होगी. बूथ स्तर पर कांग्रेस का संगठन नही है संगठनात्मक ढ़ांचा बहुत ही कमजोर है और उसी कमजोरी को दूर करने के लिये अब पार्टी पंचायत एवं वार्ड स्तर पर कमेटियां बना रही है ताकि बूथ स्तर पर संगठन की पकड़ हो.

पूर्व विधायक का कांग्रेस से मोह भंग

मऊगंज के पूर्व विधायक लक्ष्मण तिवारी का कांग्रेस से दो साल के पहले ही मोह भंग हो गया. वर्ष अप्रैल 2024 को कांग्रेस पार्टी का दामन थामा था और अब पार्टी के नेताओं पर गंभीर आरोप लगाने के साथ प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है. तिवारी ने सवर्ण समाज पार्टी की स्थापना कर राजनीति में कदम रखा था और कई बार चुनाव लड़े, हारते रहे. जनशक्ति पार्टी में जाने के बाद मऊगंज से विधायक चुने गए फिर भाजपा में शामिल हुए. उसके बाद भाजपा को छोड़ कर वर्ष 2023 में सपा से टिकट लेकर सिरमौर से चुनाव के मैदान में उतरे, जमानत जप्त हुई फिर कांग्रेस में शामिल हो गये और अब कांग्रेस को भी टाटा कर दिया. दरअसल मऊगंज में एक कार्यक्रम के दौरान तिवारी ने यहा के पूर्व विधायक सुखेन्द्र सिंह बन्ना का नाम लिये बिना ही निशाना साधा था. जिसके बाद नोटिस जारी हुई और यही से मनमुटाव शुरू हुआ, नोटिस से आहत चल रहे तिवारी ने कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष सहित नेताओं पर आरोप लगाते हुए इस्तीफा दे दिया. अब आगे किस दल का दामन थामेगें, यह तो वह खुद जाने.

वकील के रूप में ममता की दलील

ममता बनर्जी संभवत: पहली मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने वकील के रूप में सुप्रीम कोर्ट में अपनी मौजूदगी दर्ज कराई और विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के खिलाफ तर्कपूर्ण मुद्दों के साथ जिरह की. यह कोई ड्रामा नहीं था क्योंकि ममता स्वयं विधि स्नातक या लॉ ग्रेजुएट हैं और उनकी दलील है कि एसआईआर की वजह से उनके राज्य बंगाल के साथ भारी अन्याय हो रहा है. यदि किसी लड़की की शादी के बाद उसको अपना सरनेम बदलकर पति का सरनेम लगाना पड़ता है, तो इस बदलाव के कारण मतदाता सूची से उसका नाम हटा दिया जाता है. इसके अलावा बंगाली सरनेम या उपनाम ब्रिटिश शासन के दौरान संक्षिप्त हुए हैं जैसे कि बंदोपाध्याय, मुखोपाध्याय, चट्टोपाध्याय को क्रमश: बनर्जी, मुखर्जी और चटर्जी कहा जाने लगा. इसलिए पूर्वजों और अगली पीढ़ी के सरनेम में बदलाव आ गया. ठाकुर को टैगोर लिखा जाने लगा. यदि एसआईआर का काम करने वाले बीएलओ को व्यक्ति का सरनेम उसके पिता या दादा से अलग नजर आया तो उसका नाम वोटर लिस्ट से काट देगा.

इसके अलावा बांग्ला में उच्चारण भी अलग है. भट्टाचार्य को वहां भट्टाचार्जी तथा बंदोपाध्याय को बोंदोपाध्याय कहेंगे. यह वैसा ही है जैसे रसगुल्ला को बंगाली रोशोगुल्ला कहते हैं. बांग्ला में च्वज अक्षर नहीं है वह च्बज बन जाता है. वहां नवीन को नबीन पुकारेंगे. सुप्रीम कोर्ट ने आश्वस्त किया कि वह स्पेलिंग की वजह से होने वाले विवाद को हल करेगा. ममता बनर्जी ने वकील के रूप में कहा कि न्याय बंद दरवाजों के पीछे रो रहा है. मुझे 5 मिनट बोलने का समय दीजिए. हम समस्या का समाधान चाहते हैं और अपने दायित्व से पीछे नहीं हटेंगे. मुख्य चुनाव आयुक्त को 6 बार लिखा गया लेकिन एक जवाब भी नहीं मिला. इस पर सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि हम आपको 15 मिनट देंगे. आपके पास देश के सबसे वरिष्ठ वकील मौजूद हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

शरद पवार के पुराने हुए दांव-पेंच देवाभाऊ की राजनीति काफी तेज

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, महाराष्ट्र के दिग्गज नेता कहलाने वाले शरद लाजवाब मानी जाती थी. कोई अनुमान नहीं लगा पाता था कि उनका अगला कदम क्या होगा!. अपने राज्य से लेकर दिल्ली तक उनकी धाक थी. आपको याद होगा कि बारामती के एक समारोह में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि राजनीति में शरद पवार मेरे गुरु रहे हैं. वसंतदादा पाटिल की सरकार गिराकर पवार सिर्फ 38 वर्ष की उम्र में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बने थे. विदेशी मूल के मुद्दे पर सोनिया गांधी को चुनौती देकर अलग पार्टी बनाने का दमखम भी उन्होंने दिखाया था.

हमने कहा, इतिहास छोड़िए, वर्तमान को देखिए. जंगल का शेर भी दांत गिर जाने और नाखून घिस जाने के बाद पहले के समान बलशाली नहीं रह जाता. आज राजनीति में कदम-कदम पर देवेंद्र फडणवीस सीनियर पवार को मात दे रहे हैं. उनके पैरों के नीचे से कालीन खींच लेते हैं और पवार देखते रह जाते हैं. इस समय राजनीति के असली चाणक्य देवाभाऊ हैं जिनकी रैपिड फायर वाली चाल हर वक्त

कामयाब हो जाती है. पहले तो ऑपरेशन लोटस के तहत बीजेपी ने अजीत पवार को उनके चाचा से अलग कर एनसीपी को विभाजित करवा दिया था. इसके भी पहले 48 घंटे की सरकार का प्रयोग देवेंद्र फडणवीस ने किया था. अभी शरद पवार की कुल जमापूंजी केवल 10 विधायकों की रह गई है.

पड़ोसी ने कहा, सबसे बड़ा कूटनीतिक पराक्रम तो देवाभाऊ ने यह दिखाया कि एनसीपी के एकीकरण या विलय के गुब्बारे में अपने तरीके से पिन टोंच दी जिससे वह फूल ही नहीं पाया. अजीत पवार के विमान दुर्घटना में निधन के बाद शरद पवार को संभलने का मौका न देते हुए तुरंत सुनेत्रा पवार को उपमुख्यमंत्री पद की शपथ दिलवा दी. अब अजीत की विरासत संभालते हुए पार्टी प्रमुख भी सुनेत्राताई ही रहेंगी. शरद पवार की हालत खाली या चुके हुए कारतूस जैसी हो गई है. देवेंद्र अपनी चाल बड़ी तत्परता से चलते हैं. पहले शिवसेना और फिर एनसीपी को तोड़ना तथा बीजेपी को महाराष्ट्र की भारी जबरदस्त पार्टी बनाने का कमाल देवाभाऊ ने दिखाया है. ऐसे में शरद पवार कर भी क्या सकते हैं!

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12164 - डॉ. सागर खादीवाला

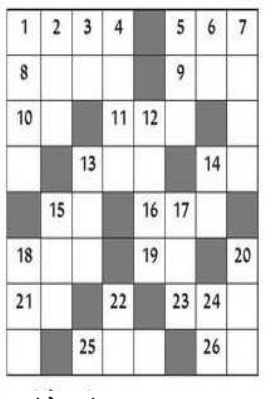

बाएं से दाएं

1. संगीत में सात स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम, स्वरग्राम 5. एक कल्पित पत्थर जिसके लोहा छुआने से सोना बन जाता है 8. व्यायाम, बहुलता (उर्दू) 9. चिपकाना, चपकना 10. पांव, पैर 11. तोप, बंदूक आदि का छोड़ना 13. आग, अग्नि (सं.) 14. शालि जिसमें से चावल निकलता है 15. चेतना, होश, व्याकरण में वह विकारी शब्द जो किसी कल्पित या वास्तविक वस्तु का बोधक होता है (सं.) 16. बादल, मेघ 18. मंच, चार लट्ठों पर बांधकर बनाया गया ऊंचा स्थान 19. प्यारा या दुलारा लड़का 21. चोट, आघात, हमला, सप्ताह का दिन 23. हिलोर, तरंग 25. असत्य, अशुद्ध (उर्दू) 26. समूह, लोगों का गुट, फूल की पंखुड़ी

ऊपर से नीचे

1. घबराहट, हिचक 2. सेना के लिए खाद्य सामग्री, राशन (उर्दू) 3. बनाने वाला, अगर (उर्दू) 4. निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने के लिए मत देने की क्रिया या भाव 5. भरण-पोषण करना, हिंडोला 6. स्वाद, फलों आदि का निचोड़ा हुआ अंश 7. अनादि काल, बहुत दिनों से चली आई परंपरा, शाश्वत 12. कोलाहल, गड़बड़ी 13. ज्ञान या बोध न होने का भाव 14. प्रवाह, दफा 15. गमन, चलना, एक स्थान से दूसरे स्थान को आने-जाने के साधन (कम्युनिकेशन) 17. पारिश्रमिक लेकर खरीदने-बेचने में सहायता देने वाला, मध्यस्थ (उर्दू) 18. पीब, सामग्री (उर्दू) 20. निष्कपट, सीधा-सादा, सुगम 22. भूमि जोतने का उपकरण 24. सीमा, मर्यादा (उर्दू)

Solution 12163

मे	धा	पा	ट	क	र		च
दि	न	क	र		सा	द	र
नी		क	ट	ह	ल		म
	दु	ला	रा			ता	रा
मा	रा		ना		व	ज	ह
र	च	ना		सू	द		ट
क	र		पु	र	न	म	
	ण		र	मा		हा	ला

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में विशेष परिश्रम करना होगा, वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग रहेगा, आर्थिक लाभ होगा, व्यर्थ वाद विवाद रहेगा, मित्र के कारण कार्यो में बाधाओं का सामना करना पडेगा, वर्ष के मध्य में मतभेद रहेगा, पारिवारिक परेशानी में वृद्धि होगी, मान सम्मान के प्रति सतर्क रहें, स्वजनों से मतभेद होगा, शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी, वर्ष के अन्त में शासन सत्ता का लाभ होगा, व्यक्ति विशेष का सहयोग मिलेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पद का लाभ मिलेगा, सामाजिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शत्रु वर्ग से कष्ट होगा, चिन्ता रहेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को स्थिति में सुधार होगा, शिक्षा में सफ्लता मिलेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में रूचि रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा, मानसिक चिन्ता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, शांतिप्रिय, व्यक्तित्व का धनी होगा. अपने कार्यो के प्रति सजग रहने वाला ईमानदार व लोकप्रिय होगा. शिक्षा उत्तम रहेगी. कला, साहित्य और अध्ययन में विशेष रूचि रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

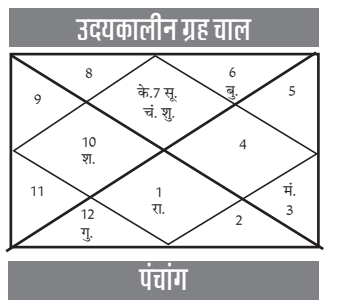

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2082 फाल्गुन कृष्ण अष्टमीं चन्द्रवासरे दिन-रात, विशाखा नक्षत्रे दिन-रात, वृद्धि योगे रात 1/19, बालव करणे सू.उ. 6/29, सू.अ. 5/31, चन्द्रचार तुला रात 1/23 से वृश्चिक, शु.रा. 7,9,10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12, 3,4,6 शुभांक- 9,2,6.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन कृष्ण अष्टमीं को विशाखा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, पीतल, कांसा, अरंडी के भाव में नरमीं रहेगी. गुड, खांड के भाव में समानता रहेगी. भाग्यांक 3721 है.

मेष- मामूली बात पर मित्रों से कहा सुनी हो सकती हैं नौकरी में उन्नति होगी. महत्वपूर्ण कार्य बनेगा. माता पिता का सहयोग रहेगा, समस्याओं का सरलता से समाधान होगा.

वृषभ- पराक्रम और साहस में वृद्धि होगी. स्वास्थ्य बेहतर रहेगा. मान सम्मान मिलेगा. आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा. किये गये प्रयासों में सफ्लता मिलेगी.

मिथुन- धार्मिक यात्रा होगी. सामाजिक कार्यो में प्रतिष्ठा बढ़ेगी. परिश्रम अधिक करना पड़ेगा. खर्च का कोई नया कार्य सामने आ सकता है. अचानक लाभ होने का योग है.

कर्क- शत्रुओं की पराजय होगी. आय में वृद्धि होगी. वैभव विलासिता की वृद्धि होगी. प्रिय व्यक्ति से भेंटवार्ता होगी. शारीरिक अस्वस्थ्यता रहेगी.

सिंह- पारिवारिक सुख सहयोग, मान सम्मान में वृद्धि होगी. वाद विवाद को टालना हितकर रहेगा. स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें. मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

कन्या- उत्तम भोजन से विशेष प्रसन्नता होगी. कार्य क्षेत्र में विवाद से बचना चाहिये. किसी धार्मिक यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है. नजदीकी सहयोगी का सहयोग प्राप्त होगा.

तुला- व्यवसाय व्यापार में सफ्लता, धन का लाभ, मान सम्मान में वृद्धि होगी. लोकप्रियता में वृद्धि होगी. किया गया प्रयास सफ्ल होगा. आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति होगी.

वृश्चिक- मित्रों का सहयोग बना रहेगा. केरिअर में सफ्लता के लिये सही समय का इंतजार करें. शिक्षा संतान के कार्यो में सफ्ता प्राप्त होगी. व्यसन से बचने का प्रयास करें.

धनु- धार्मिक रूचि में वृद्धि होगी. यात्रा में विघ्न बाधा उपस्थित होंगी. पूज्य व्यक्ति की सलाह लाभदायक उपयोगी रहेगी. मान सम्मान प्राप्त होगा. संयम रखें.

मकर- राजनीतिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी. निजी कार्यों को टालने से समस्या बनेगी. व्यापार व्यवसाय में उन्नति होगी. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा.

कुम्भ- बुजुर्गों का मार्गदर्शन लाभकारी रहेगा. मांगलिक कार्यों में खर्च होगा. स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें. व्यर्थ वाद विवाद से बचें. मनोनुकूल कार्य बनेंगे.

मीन- आय कम, व्यय अधिक होगा. साहस, पराक्रम में वृद्धि होगी. राजनैतिक कार्यों से लाभ होगा. उद्देश्य पूर्ति का योग है. मानसिक सुख और संतोष बना रहेगा.

SUDOKU 7296

6					7			
		8	2				7	5
	4			3				6
	7	1			2		5	
8				4				3
	2		8			9	6	
2				8			3	
4	3				9	8		
			3					9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7295

7	4	6	9	1	5	8	3	2
1	5	2	8	3	7	4	6	9
9	3	8	2	6	4	7	1	5
8	6	4	7	9	1	5	2	3
5	2	7	3	4	6	9	8	1
3	9	1	5	8	2	6	7	4
2	7	9	1	5	8	3	4	6
6	1	5	4	7	3	2	9	8
4	8	3	6	2	9	1	5	7